जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

जुलाई 2026

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
सोशल मीडिया
नाजरीन
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)
वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जुलाई, 2026

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-477 वर्ष : 40 अंक : 12 जुलाई 2026

आवरण : अशोक अंजुम

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. समर शेष है... : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

न हन्यते
13. उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो : महेंद्र कुमार सानी

मुड़-मुड़ के देख
16. इस सदी के अंत में एक सपना : राजेन्द्र दानी ('हंस', जनवरी 1998)

कहानियां
26. दखल दिहानी : जयनंदन
32. दरारों में कैद परछाइयां : सरस दरबारी
38. हत्यारे की नींद : श्रीधर करुणानिधि
50. दहशतगर्द : एजाजुल हक
58. गर्म कोट : राजिंदर सिंह बेदी (उर्दू कहानी) (अनुवाद : ज़ाहिद ख़ान और इशरत ग्वालियरी)

कविताएं
56. उपेन्द्र कुमार, अश्विनी कुमार

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन और साहित्य
63. आधुनिक दर्शन की विकास यात्रा-8 : अशोक कुमार

ऋत्विक घटक शताब्दी वर्ष
68. ऋत्विक घटक में थी माटी की गंध : सत्यजित राय

लघुकथा
12. नायक : मार्टिन जॉन

ग़ज़ल
67. इन्द्रपाल सिंह तन्हा
69. राजेन्द्र राजन

उपन्यास अंश-7
70. सोमालिया का यातनाघर : राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय

आत्मान्वेषी आलोचना
72. पितृसत्ता एंट्रोपिक जड़ता का प्रतिरूप है : रोहिणी अग्रवाल

परख
79. सभ्य समरस सामाजिकता की बेचैन तलाश: विभांशु दिव्याल
83. आपत्ति दर्ज कराती कहानियां : सुधीर सजल
86. अस्मिता की तलाश : रीना सिंह

साहित्यनामा
89. गगन घटा घहरानी साधो गगन घटा घहरानी: साधना अग्रवाल

शब्दवेधी/शब्दभेदी
94. नाबालिगों से दुष्कर्म : तसलीमा नसरीन

रेतघड़ी
97

समर शेष है...

जब स्थितियां भ्रामक और अराजक होती चली जाएं, तब तवारीख़ के किस पल को पकड़कर उसकी विवेचना की जाए, यह प्रश्न लाज़मी हो जाता है. बहुत आगा-पीछा किए बिना बेहतर होगा हम 12 जून 2025 से ही आरंभ करें, जब अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने अमेरिका-इज़राइल और ईरान के बीच जारी परमाणु शांति समझौता वार्ता के दरमियान इराक़ के 'सामूहिक विनाश के हथियारों' की तर्ज पर अचानक यह घोषित कर दिया कि ईरान के पास बहुत बड़ी मात्रा में मिलिट्री ग्रेड संवर्धित यूरेनियम का ज़ख़ीरा मौजूद है, कि ईरान परमाणु अप्रसार संधि के नियमों का सरासर उल्लंघन करते हुए अपनी गतिविधियों के बारे में जानकारियां छिपा रहा है, पारदर्शिता नहीं बरत रहा और विश्व के लिए एक बड़ा ख़तरा बन गया है. इज़राइली-अमेरिकी दबाव में आईएईए की संचालक समिति के 19 सदस्यों ने आनन-फानन में इन आरोपों के पक्ष में अपना फैसला सुना दिया. अलबत्ता, रूस, चीन और नाइजर इस प्रस्ताव के विरोध में रहे, जबकि भारत और पाकिस्तान सहित शेष सदस्यों ने तटस्थता चुनी. ईरान और वेनेजुएला वोटिंग प्रक्रिया से बाहर रहे. नेतन्याहू और ट्रम्प का यह खेल इतना शातिराना था, कि इस मतसंग्रह के अगले ही दिन इन दोनों ने ईरान पर बड़ा हवाई हमला आरंभ कर दिया. 13 जून 2025 से 24 जून 2025 तक चले इस बारह दिवसीय इज़राइल-अमेरिका प्रायोजित युद्ध के दौरान ट्रम्प लगातार ईरानी आवाम को अपने देश में तख़्तापलट के लिए उकसाते रहे और उन्हें अपनी क़िस्मत वापस अपनी मुट्ठियों में ले लेने जैसा लुभावना और उत्तेजक चारा डालते रहे. अमेरिकी प्रशासन ने दशकों पहले गद्दी से उखाड़ फेंके गए अपने प्यादे शाह रज़ा पहलवी के अमेरिका में बसे पोते से भी इस सत्ता परिवर्तन के लिए आह्वान कराया और बड़ी चालाकी के साथ इस षड्यंत्र में अपनी शिरकत से दूरी भी बनाए रखी. पश्चिम और इज़राइल समर्थक मीडिया का प्रचार तो ऐसा रहा मानो पूरा ईरान अपनी सत्ता के विरुद्ध सरफरोशी के रंग में रंग चुका हो और अब किसी भी पल वहां खून की नदियां बह सकती हैं. ईरानियों का खून बहा भी लेकिन मुख्यतः इज़राइली-अमेरिकी हमले में. बाक़ी का सारा नैरेटिव अलिफ़ लैला का क़िस्सा भर बनकर रह गया. इज़राइल-अमेरिका की गुंडागर्दी की प्रतिक्रिया में ईरानियों में जैसा देशभक्ति का जज़्बा उभरा, उसका सही अनुमान दोनों ताक़तवर मुल्क नहीं लगा पाए. हालांकि यह भी उतना ही सच है कि ईरान आदर्श समाज होने से कोसों परे है. ईरानी सत्ता के विरुद्ध खड़े होना एक भारी जोखिम मोल लेने जैसा है और आश्चर्यजनक रूप से स्त्रियों की उच्च शैक्षणिक योग्यता के बावजूद उनपर पुरुष-सत्तात्मक व्यवस्था द्वारा बड़े ही क्रूर, अमानवीय नियम लागू हैं, और कभी न कभी इसका हल सामाजिक क्रांति के रास्ते ही निकलेगा. यूं दूसरी तरफ़ देखें तो इज़राइल जैसे कट्टरवादी और अमेरिका जैसे जाहिल पुरुष प्रधान समाजों की तुलना में ईरान बहुत पिछड़ा नज़र नहीं आएगा.

बहरहाल, ईरानी सत्ता के विरुद्ध वहां कुछ प्रदर्शन अवश्य हुए और अनेक गिरफ़्तारियां भी. पर जल्द ही यह अमेरिका पोषित और समर्थित 'इंकलाब' ठंडा पड़ गया. जबकि अपने ज़ियोनिस्ट लठैतों सहित अमेरिकी प्रशासन और युद्ध पिपासु पीट हेगसेथ, जेडी वेंस और खुद उनके नारंगी बालों वाले पापा जी भी बढ़-चढ़कर दावे ठोकते रहे कि उन्होंने ईरान की कमर पूरी तरह से तोड़ दी है. भारी आर्थिक संकटों और विनाश झेलते ईरान ने हथियार नहीं डाले और हर अवसर पर हमलों का मुंहतोड़ जवाब दिया, जो अमेरिका और इज़राइल के मंसूबों पर आठवें आश्चर्य की तरह पानी फेरता चला गया. ईरान की मिसाइलें भी मध्य-पूर्व में फैले अमेरिकी अड्डों से लेकर तेल-अवीव तक मार करने लगीं. अब तक आईएईए के साथ सहयोग करते ईरान ने इस हमले और गुंडागर्दी के जवाब में उनके द्वारा अपने नाभिकीय प्रोग्राम के निरीक्षण पर रोक लगा दी. खाड़ी में तनाव बढ़ता रहा, कभी किसी जलपोत पर हमला तो कभी विमानों पर. लंबे समय से लेबनान में इज़राइल द्वारा हो रहा रक्तपात यथावत जारी रहा. उसके विमान वहां पर अनवरत मौत बरसाते रहे.

अमेरिका ने अपेक्षित नतीजे न निकलते देख कई बार मध्यस्थता करने वाले ओमान के अलावा क़तर और पाकिस्तान से भी मदद की गुहार लगाई, कि भाई कुछ ऐसा करो कि ईरान से युद्ध भी रुक जाए और हमारी इज़्ज़त भी महफ़ूज़ रह जाए. फिर 28 फ़रवरी का वह दिन आ गया जब ओमान की मध्यस्थता में चल रही वार्ता के दौरान इज़राइल ने इस शांति की मुहिम को ठेंगा दिखाते हुए